10

शिक्षा में कठपुतली मेरे शब्द मेरी शक्ति

कविता बिष्ट*
अवधेश कुमार लवानियाँ**

आधुनिक युग में शिक्षा को गुणवत्ता के शिखर तक ले जाने हेतु शैक्षिक तकनीक जैसे संसाधनों, विधियों एवं सामग्रियों को उपयोग में लाया जाता है। शिक्षण एवं अधिगम के स्रोतों को प्रभावी बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि सभी शैक्षिक स्रोतों जैसे व्यक्ति एवं सामग्री, विधि एवं तकनीक तथा संसाधन एवं संचार आदि को एकीकृत रूप से उपयोग में लाया जाए। इस प्रकार अध्ययन एवं अध्यापन की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न सामग्रियों, विभिन्न शिक्षण विधियाँ, श्रव्यं एवं दृश्य सहायक सामग्री आदि को सम्मिलित करते हैं। कठपुतलियाँ बच्चों को बहुत पसंद आती हैं। कठपुतलियों के माध्यम से पढ़ाने से बच्चों में भाषा विकास के साथ-साथ नैतिक विकास भी होता।

शैक्षिक तकनीक का उपयोग संकीर्ण-दृष्टि अथवा संपूर्ण-दृष्टि के पुनर्निर्माण हेतु एक यंत्र के रूप में किया जाता है। शैक्षिक तकनीक प्रणाली की अभिकल्पना है — सर्वप्रथम एक विशिष्ट उद्देश्य का निर्माण करना, तदुपरांत उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए योजनाएँ बनाना।

अभिकल्पना अपने अनवरत परिश्रम के आधार पर एक नवीनतम प्रक्रिया की खोज करती है। उदाहरण के रूप में चलचित्र माध्यम को लिया जा सकता है। पूर्व में चलचित्र को एक बड़े थिएटर में देखा जाता था, जबकि वर्तमान समय में चलचित्र को एक विडियो कैसेट या सी.डी., पेन ड्राइव में रूपांतरित करके, एक छोटे समूह में या व्यक्तिगत रूप से भी देखा जा सकता है। पठन-पाठन प्रक्रिया के विकास हेतु तकनीक के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान समय में शैक्षिक तकनीक का अध्ययन-अध्यापन में तभी लाभ उठाया जा सकता है जब उन नवीन तकनीकों को वास्तविक रूप में प्रयोग में लाया जाए। किसी भी तकनीक का पूरा लाभ तभी उठाया जा सकता है जब उस तकनीक को उपयोगकर्ता के पास सही समय में उपलब्ध कराया जाए साथ ही उसका अधिक से अधिक उपयोग किया जाए। अनुसंधानकर्ताओं ने यह संकेत दिया है कि पूर्व में जो भी तकनीक से संबंधित नवाचार हुआ था, वह निम्न पर स्वीकार्य था। वास्तव में उनमें तकनीक रिक्तता थी। उस तकनीक की रिक्तता की पूर्ति हेतु संप्रेषण के क्षेत्र में उपयुक्त एवं प्रभावकारी नवाचर किए गए हैं।

* *मुख्य प्राध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
** *प्राथमिक शिक्षक*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

शिक्षा में कठपुतली

उत्पत्ति — नवाचार पद्धति के चुनाव के कारण

एक दिन की बात है। मेरे विद्यालय के एक अध्यापक मेरे पास एक बच्चे को लेकर आए क्योंकि वह बच्चा अपने साथ एक खिलौना लेकर आया था और सभी बच्चे उस खिलौने की तरफ आकर्षित हो रहे थे। उस बच्चे से पूछने पर उसने बताया कि वह उसका मनपसंद खिलौना है। प्राथमिक अध्यापक अवधेश कुमार द्वारा उस बच्चे को लाने का उद्देश्य सिर्फ़ इतना था कि बच्चे फिल्म शो के दौर में भी, हाथ से बने गुड्डे की तरफ ज़्यादा आकर्षित हो रहे हैं। उस दिन मेरे और अध्यापक के मन में विचार आया कि इस आधुनिक दुनिया में भी बच्चों की हाथ से बने खिलौने में ज़्यादा रुचि है। बस फिर हमने सोचा क्यों न इस प्रकार के हाथ से बने खिलौनों का उपयोग विद्यालय के विभिन्न क्षेत्रों में भी किया जाए। इस प्रकार शुरुआत हुई हमारी इस बहुउद्देशीय एवं रुचिकर परियोजना की।

उद्देश्य

- बच्चों में कौतुहल हमेशा बना रहे इसलिए नए-नए कारण और प्रसंग ढूँढ़ना
- देखना, कहना, ढूँढ़ना, तर्क करना आदि प्राकृतिक क्षमताओं का विकास करना
- संगीत, चित्रकला, अभिनय और हस्त कला द्वारा सौंदर्यबोध
- खुद के बलस्थान और कमज़ोरियों का आकलन करने की क्षमता विकसित करना और कमज़ोरियों पर विजय प्राप्त करने की ज़िद्द जगाना, आत्मविश्वास बढ़ाना
- स्वत: और कौतुहल जागृत करना तथा यह कौतुहल हमेशा बना रहे इसलिए नए-नए कारण और प्रसंग ढूँढ़ना
- विषय की व्यापकता और गहराई से परिचय करवाते हुए स्वयं अध्ययन पर बल देना

कक्षा में कठपुतलियाँ और बच्चे

कक्षाओं में पुतलियों का उपयोग और बच्चों को उनका अधिकाधिक प्रयोग करने व उनके द्वारा अपने भावों को अभिव्यक्त करते हुए उनकी मदद करने में जो आनंद का अनुभव होता है, वह और कहीं नहीं है।

कठपुतली बच्चों को ऐसे सुअवसर प्रदान करती हैं, जो निम्नलिखित शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है —

- सृजनात्मकता उत्पन्न करना
- बच्चे की अनुभव शक्ति को बढ़ाना (निजी योग्यता)
- आत्मविश्वास और आत्मसंतोष पाने के लिए
- डर, अशांति और निराशा को निकालने के लिए सुलझी हुई राहों से सामाजिक एवं पारस्परिक क्षमता विकसित करना
- मुश्किल को हल करने, क्षमता बढ़ाना
- सुनने के कौशल में वृद्धि करना

साधन सामग्री एवं तैयारी

कठपुतली बनाने के लिए खाली बोतल, घर में इस्तेमाल न होने वाले कपड़े, ऊन के टुकड़े, चार्ट-पेपर, चिपकाने का पदार्थ एवं कक्षा में नियमित प्रयोग होने वाले वस्तु जैसे पेंसिल, रंबर, रंग आदि का प्रयोग किया।

परियोजना में अपनाई गई विधियों के लिए विद्यालय में उपस्थित सामग्री का प्रयोग किया गया।

कक्षा में बच्चों के साथ कठपुतली नियंत्रण का अनुभव

कक्षा में कठपुतली नचाने (नियंत्रण) का असली आनंद तब आता है जब विद्यार्थियों ने कठपुतली खुद निर्मित की हो तब वे कठपुतली से एक आत्मिक व मानसिक संबंध बना लेते हैं। वे अपने चरित्र एवं पात्र के अनुसार कठपुतली बनाते हैं और प्रेरित होते हैं। अपनी स्वनिर्मित कठपुतली को बात करते और चलते देखकर वे अत्यंत उत्साह और उत्तेजना से भर जाते हैं। अक्सर यह महसूस किया गया है कि विद्यार्थियों की कठपुतलियाँ उनके ही व्यवहार और चरित्र की झलक होती है।

अध्यापक, जो कठपुतलियाँ नियंत्रित करेंगे, उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि—

- वे अपनी कठपुतली से क्या प्रदर्शित करवाना चाहते हैं?
- क्या वह कोई नया प्रकरण प्रदर्शित करेंगे?
- क्या कक्षा के स्तरानुकूल वर्णन हुआ है?
- क्या किसी कविता, नाटक, कहानी का सार्थक मंचन हुआ?

परियोजना की रूपरेखा

स्तर – 1

यह स्तर परियोजना का सबसे मुख्य स्तर है इसमें शिक्षक छात्रों के उन कौशलों की ओर आकर्षित होता है जो पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुए हैं। इन अविकसित कौशलों को जानने के लिए छात्रों से कुछ क्रियाकलाप करवाते हैं। जैसे—

- *स्वयं के बारे में स्पष्टीकरण*—इसमें छात्र अपनी कमियों, कमज़ोरियों एवं शक्तियों का उल्लेख करेंगे। इसके आधार पर छात्रों की समीक्षा अन्य अध्यापक भी कर सकेंगे।

  इस अध्ययन के आधार पर छात्रों के बारे में बहुत कुछ पता चल जाएगा। जैसे—किस-किस छात्र का उच्चारण शुद्ध नहीं है, उन्हें बोलने में दिक्कत अथवा हकलाहट है या छात्रों में आत्मविश्वास की कमी है आदि।

स्तर – 2

प्रथम स्तर पूर्ण होने के पश्चात् छात्रों की पहचान कौशलों के आधार पर हो जाती है। तत्पश्चात् छात्रों को आवश्यकतानुसार समूहों में विभाजित कर दिया जाता है। इस स्तर पर छात्र अपने-अपने अविकसित कौशलों को विकसित करने का प्रयास करते हैं।

कौशलों में कुछ सीखने के साथ-साथ छात्रों को कठपुतली बनाने की शिक्षा प्रदान की गई, इसमें घर पर इस्तेमाल न होने वाले समान का प्रयोग किया गया।

सामान्यत: छात्रों को सिखाई गई कठपुतलियाँ इस प्रकार हैं—

- दस्तानों से बनी कठपुतलियाँ
- प्लास्टिक बोतल से बनी कठपुतलियाँ
- चिड़ियों की कठपुतली
- हाथ से चलने वाली, कपड़ों से बनी कठपुतली
- धागे एवं तार से चलने वाली कठपुतली

छात्र कठपुतली बनाना सीखते हैं एवं उन्हें प्रदर्शन के लिए भी इस्तेमाल करना सीखते हैं।

स्तर – 3

दूसरे स्तर के पश्चात् हमारा अगला स्तर शुरू होता है जहाँ छात्र अपनी किताब एवं दूसरे छात्रों की कहानियों पर कठपुतलियाँ नचाते हैं। तत्पश्चात् छात्र अपनी अलग कहानी बनाने लगते हैं जो कि एक या दो मिनट की होती है। इन कहानियों पर शिक्षक के अवलोकन एवं निरीक्षण में कठपुतली नृत्य करवाया जाता है। यह लघु कठपुतली नृत्य मध्याह्न भोज के समय किया जाता है। छात्र कठपुतली मंचन को देखते हुए अपने मध्याह्न भोजन का आनंद लेते हैं। छात्रों में इन कठपुतलियों के नृत्य से मूल्यों का विकास होता है एवं वे इन मूल्यों का दिनचर्या में प्रयोग करते हैं।

कठपुतली क्रियान्वयन

छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु कुछ सामूहिक एवं एकल क्रियाकलापों की योजना बनाई गई। सभी क्रियाकलापों का चयन छात्रों के स्तर एवं रुचि को ध्यान में रखकर किया गया, जिसमें छात्रों ने पूर्ण उत्साह एवं रुचि के साथ भाग लिया। हमने परियोजना के विभिन्न क्रियाकलापों की उद्देश्य हेतु उचित परीक्षण करवाए। कठपुतली निर्माण छात्रों द्वारा अध्यापक के मार्गदर्शन में किया गया। प्रत्येक क्रियाकलाप को रुचिकर बनाने हेतु बच्चों द्वारा विभिन्न तरह के नाटकों का चयन कर उनका विद्यालय में मंचन किया गया।

छात्रों ने अपनी कहानी एवं भाव को चित्रों द्वारा प्रस्तुत किया। इस कला के द्वारा शिक्षक को छात्रों की प्रतिभा एवं कौशलों का पता लगता है जिस पर शिक्षक आगे आवश्यक सुधार कार्य कर सकता है।

इस क्रियाकलाप में छात्र अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं। छात्र सुंदर एवं सुडौल अक्षरों में अपनी इच्छानुसार लघु नाटिका लिखते हैं। इन नाटकों का मंचन छात्रों द्वारा कठपुतलियों के रूप में एन.सी.ई.आर.टी. में प्रस्तुत किया गया और इस प्रकार विभिन्न लोगों तक संदेश पहुँचाए गए।

इस क्रियाकलाप के अंतर्गत छात्रों ने सर्वप्रथम दूसरों की कविता को कठपुतली द्वारा प्रात:कालीन प्रार्थना-सभा में प्रस्तुत किया। फिर धीरे-धीरे स्वरचित कविताओं को भी छात्रों के समक्ष पेश किया गया। इस प्रकार छात्रों की सृजनात्मक शक्ति के साथ-साथ अन्य छात्रों में भी कठपुतलियों के प्रति दिलचस्पी जाग्रत हुई।

छात्रों द्वारा लिखी गई लघु नाटिका को उनके द्वारा निर्मित कठपुतलियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन कठपुतलियों द्वारा विभिन्न संदेश भी पहुँचाए गए। इस क्रियाकलाप के द्वारा छात्रों की रचनात्मक एवं

सृजनात्मक शक्ति का विकास हुआ। कुछ नाटकों को नाना-नानी दिवस, प्रात: कालीन सभा में प्रस्तुत किया गया, जिनकी खूब सराहना हुई।

छात्रों में पेड़ों के प्रति संवेदनशीलता का विकास करने हेतु उनके द्वारा सुंदर नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसमें पेड़ों के महत्त्व को दर्शाया गया। इस नाटक को विद्यालय की प्राचार्या ने खूब सराहा और बच्चों को हार्दिक बधाई दी। इस प्रकार छात्रों में पेड़ों के प्रति प्रेम की भावना का विकास व संरक्षण के प्रति जागरुकता उत्पन्न होती है।

अपनाई गई विधियाँ

कहानी कथन/प्रेरक प्रसंग — कहानी कथन ज्ञानार्जन, मनोरंजन, मूल्य विकास का महत्वपूर्ण साधन है। लगभग प्रतिदिन 2–3 मिनट कहानी, प्रेरक प्रसंग सुनने के लिए रखे गए। सरल भाषा के साथ-साथ बच्चों की उम्र और विषय विविधता का ध्यान इनके चुनाव में रखा गया। जैसे – शौर्य कथा, मानवीय मूल्य आदि। फिर इन्हें कहनियों को कठपुतली के खेलों द्वारा प्रात:कालीन सभा में प्रस्तुत किया गया।

- आकलन, स्मरण, विचार और अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन देने वाले इस कार्य के आरंभ में केवल अध्यापक और मुख्य अध्यापिका का सहभाग था।
- धीरे-धीरे स्वखुशी से बच्चे इस गतिविधि में शामिल हुए। यह बात इस परियोजना की सार्थकता को सिद्ध करती है।

जिज्ञासु बनाना — विद्यार्थियों में जागृत होने वाली जिज्ञासा (कौतूहल) शिक्षण यात्रा का आरंभ बिंदु है क्योंकि जिज्ञासा ही नया शोध करने की प्रेरणा देती है। जिससे अपने सामाजिक परिवेश के प्रति जागरुकता और आकलन बढ़ता है। इस गतिविधि के अंतर्गत करवाए गए कार्य।

- कक्षा में पाठ्यपुस्तक के पाठों को कठपुतली द्वारा भावानुकूल वार्तालाप के रूप में समूह में प्रस्तुत करना।
- कक्षा में सुनाई गयी/पढ़ी गयी कविताओं को कठपुतली के सहारे सुंदर रूप से प्रस्तुत करना।

कल्पना करना/संभावित परिणाम बताना — कल्पना करना और तर्क करना इन क्षमताओं के विकास के लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास करवाए गए जो इस प्रकार थे —

- दोस्तों के बीच में वार्तालाप
- शिक्षक और बच्चे के बीच में वार्तालाप।

हाव-भाव के अभ्यास से क्षमता विकास — इस गतिविधि के अंतर्गत बताए गए सभी क्रियाकलाप करते हुए कविता पाठ, कहानी पाठ, अभिनय, गीत गायन, आशु भाषण आदि गतिविधियों में बच्चों ने भाग लिया और कई अनुभव प्राप्त किए। अभिव्यक्ति के इन अवसरों ने न केवल बच्चों के आत्मविश्वास

को बढ़ाया, अपितु अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने के गुर भी उन्होंने सीखे। जिससे उनकी दक्षताओं के विकास में मदद मिली।

स्वयं अध्ययन — स्वयं अध्ययन से बच्चों के आकलन, शोध, प्रस्तुतीकरण, सारांश/ विस्तार करने की तथा हाथों से काम कर सीखने की क्षमताओं का विकास होता है। रटंत पद्धति का महत्त्व कम करना, पालकों द्वारा बच्चों के परियोजना बनाने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना, स्वयं अध्ययन को बढ़ावा एवं हाथ से काम कर सीखने का अवसर देने के लिए कक्षा में ही व्यक्तिगत एवं सामूहिक परियोजना करवाई गई जैसे —

व्यक्तिगत — नदी किनारे का दृश्य बनाना, अपना प्रिय कार्टून चित्र बनाना आदि।

सामूहिक — बनाए गए चित्रों सी एक छोटी से कहानी बनाना।

बातें बनाना — बच्चों के अंदर अतिश्योक्ति अलंकार कूट-कूट कर भरा होता है वह कभी अपने आप को किसी से कम नहीं समझता और यह प्रवृति जन्मजात होती है। इस मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन देने के लिए एवं बच्चों की कल्पनाशक्ति का उपयोग मनोरंजन एवं शाब्दिक विकास के लिए किया गया।

सृजनात्मक लेखन — बच्चे अगर किसी चीज़ से सबसे ज़्यादा डरते है तो वह है लेखन, इसका कारण है बच्चों के पास शब्दकोश की कमी उन विषयों पर जो हम बच्चों को देते हैं। इस अरुचि को बदलने के लिए शिक्षक ने दैनिक जीवन से ही विषयों का चुनाव करके दिया गया, ताकि बच्चों द्वारा लेखन में जीवंतता आ सके। बच्चों द्वारा सुझाए गए विषयों पर अनुछेद, भाषण, कविताएँ, आदि लेखन कराया गया।

परिणाम — उपलब्धियाँ

किसी भी कार्य एवं परियोजना के क्रियान्वयन से पहले उसका उद्देश्य निर्धारण अति आवश्यक है। अत: हमने भी इस परियोजना के उद्देश्य निर्धारित किए तथा हमें यह अनुमान ही नहीं था की उद्देश्यों की पूर्ति के दौरान हमें इतने उच्चे श्रेणी के परिणाम मिलेंगे। उचित मानदण्डों के अभाव में भी हमें उम्मीद से बेहतर परिणाम मिले हैं। बच्चों में अत्याधिक प्रेरणा विकसित हुई है जिससे बच्चों के विभिन्न कौशलों का भी विकास उम्मीद से कहीं अधिक मात्रा में हुआ है। जिसका बिंदुवार वर्णन नीचे दिया गया है —

- कक्षा में बच्चों की मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में गुणात्मक सुधार हुआ।
- आपसी बातचीत और प्राप्त अभिव्यक्ति के अवसरों ने बच्चों में एकाग्रता, क्रियाशीलता, संवाद कौशल और आत्मविश्वास को बढाया।
- हस्त कौशल का अवसर कक्षा के सभी बच्चों की सहभागिता, दैनिक जीवन के आनंदमय और फलदायी साबित हुआ।
- बच्चों ने न केवल कठपुतलियों को नचाया, अपितु अपने आप को इस काबिल बनाया कि वे समाज की कमियों को समझें और उन पर लोगों को जागरूक कर सके।
- बच्चों के अंदर छुपी हुई प्रतिभाओं का विकास हुआ परिणामस्वरूप बच्चे शिक्षक के साथ अपनी समस्याओं को बाटने लगे।

- परियोजना के तहत करवाए गए क्रियाकलापों से केवल छात्रों का ही नहीं, बल्कि शिक्षकों का भी शैक्षिक एवं तकनीकी विकास हुआ है।

उपसंहार/निष्कर्ष

स्पष्ट रूप से कठपुतली कला का प्रयोग न केवल कक्षा के शिक्षण को रुचिकर बनाता है, बल्कि यह पूरे समूह को एवं प्रत्येक विद्यार्थी को अपना अहम रोल अदा करने के लिए इजाज़त देता है। कठपुतली कला प्रत्येक बच्चे में खुशी का माहौल पेश करती है और अपनी भाषा के माध्यम से बच्चों के दिलों-दिमाग पर छा जाती है।

मूल्यांकन

मूल्यांकन शिक्षक-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह पढ़ाने में शिक्षकों की तथा सीखने में विद्यार्थियों की मदद करता है। मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है न की आवधिक। मूल्यांकन को केवल आकरति और संकलित तक सीमित न रखते हुए कक्षा में की जाने वाली प्रत्येक गतिविधि से जोड़ा गया है। यहाँ मूल्यांकन को केवल बच्चों के सीखने के उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया है।

मूल्यांकन की रूपरेखा

छात्रों की क्षमता विकास का अभिलेख स्वतंत्र रूप से तालिका बनाकर और टिप्पणी लिखकर रखा गया। यह रिकॉर्ड आकारित और संकलित मूल्यांकन के परिणामों में सुधार लाने के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ।

परियोजना के शैक्षिक प्रयोजन

- पाठ्यपुस्तक और पाठ्येतर गतिविधियों का तालमेल बच्चों को अपने सामाजिक परिवेश से तथा विद्यालय को घर से जोड़ेगा।
- बुद्धि को व्यायाम देने वाले, बहुत कम लागत वाले तथा बेहतर परिणाम देने वाले यह अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।
- यह प्रयोग कक्षा 1 से 10 वीं तक सभी विषयों में उपयोगी हो सकते हैं।
- यह प्रयोग बच्चों में सीखने और मिल-जुल कर कार्य करने की क्षमता, स्वस्थ प्रतियोगिता, चैतन्य, मानवीय मूल्य, सहयोग तथा खेल की भावना जगाएँगे।
- विद्यालय में आयोजित की गयी विभिन्न गतिविधियाँ बच्चों में जीवन कौशलों को विकसित करने में सहायक सिद्ध होंगी।

परिणामों की अनुप्रयोज्यता

- नियमित कक्षाओं में, मध्यावकाश में, प्रबंधित या व्यवस्थित कालांश नाना-नानी दिवस और प्रात: कालीन सभा में यह गतिविधियाँ आयोजित की गईं।
- सामूहिक गतिविधियों के कारण स्वयं अध्ययन और मिलकर कार्य करने का अवसर मिला।
- इन गतिविधियों में लचीलापन होने के कारण प्रत्येक बच्चे की आवश्यकता और परिवेश के अनुकूल इन्हें पुन-नियोजित किया जा सकता है।

- मौखिक और कलात्मक अभिव्यक्ति के भरपूर अवसर मिलने के कारण जीवन कौशल और नैतिक मूल्यों के विकास में मदद मिली।

लागत की प्रभावकारिता

घर पर रखे हुए प्रयोग में न आने वाले कपड़े, प्लास्टिक की खाली बोतल, हाथ के दस्ताने, विद्यालय में उपलब्ध सामग्री (चार्ट, कैंची, पुस्तकें, चिपकाने का पदार्थ, संगणक आदि) का उपयोग कठपुतली बनाने के लिए किया गया, जिसकी लागत नहीं के बराबर है।

साथी अध्यापकों का योगदान

हमारे विद्यालय में प्रत्येक कक्षा के दो वर्ग हैं और सभी वर्गों में अलग-अलग अध्यापक अध्यापन कार्य कर रहे हैं। सभी ने मिलकर अपने बहुमूल्य विचारों का आदान-प्रदान अपने अनुभव के आधार पर किया। इन सभी गतिविधियों से अन्य अध्यापक भी प्रेरित हुए।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2012 'बर्ड टॉक, बलून मैन'. *मैरीगोल्ड 3*. एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली.

——. 2012 'पिनोच्चियो, गिविंग ट्री'. *मैरीगोल्ड 4*. एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली.

——. 2012 'माइ एल्डर ब्रदर' और 'टोप्सी टर्वी लैंड'. *मैरीगोल्ड 5*. एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली.

पंचतंत्र की कहानियाँ. बंदर और लकड़ी का खूंटा, चतुर खरगोश और शेर, ऊँट, सियार और कौआ http://www.hindisahityadarpan.in/2016/06/panchatantra-complete-stories-hindi.html पर देखा गया।